इकाई 1 : प्रेरक प्रसंग

पाठ 1.1 : जीवन नहीं मरा करता है

पाठ 1.2 : गुल्ली–डंडा

पाठ 1.3 : अपूर्व अनुभव

इकाई 1

प्रेरक प्रसंग

महान व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी घटनाओं को प्रेरक प्रसंगों के रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा रही है। कई बार बचपन से जुड़ी कोई छोटी सी घटना भी हमें प्रेरणा प्रदान कर जाती है; लेकिन उस तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। जीवन के छोटे–छोटे प्रसंग भी हमें सोचने को विवश कर सकते हैं। इस इकाई में शामिल किए गए पाठ न केवल विधा के स्तर पर, बल्कि संवेदना के स्तर पर भी जीवन के कुछ अनछुए प्रसंगों की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे।

जीवन में निराशा और हताशा के ऐसे कई क्षण आते हैं, जब हम पूरी तरह हार कर बैठ जाते हैं। नीरज की कविता **जीवन नहीं मरा करता है** निराशा के इन्हीं क्षणों से हमें मुक्त कर आशा का संचार करती है।

बच्चों का हृदय बड़ा निश्छल होता है। उनमें किसी प्रकार के भेद–भाव नहीं होते। जैसे–जैसे वे बड़े होने लगते हैं, उनके भीतर भेदमूलक व्यवहार उनके व्यक्तित्व में झलकने लगते हैं। प्रेमचंद की कहानी **गुल्ली–डंडा,** खेल की पृष्ठभूमि में मनुष्य के इसी अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत करती है।

बच्चे भी कई बार ऐसे जोखिम भरे काम कर बैठते हैं, जो बड़ों की कल्पना से बाहर होते हैं। तोत्तो–चान द्वारा पोलियो से ग्रस्त साथी यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने का जोखिम भरा कार्य एक ऐसे **अपूर्व अनुभव** की सृष्टि करता है, जहाँ शब्द भी चूक जाते हैं। कहने–सुनने से अधिक गहरी अनुभूति के स्तर पर उतर कर इन्हें महसूस करने की जरुरत होती है।

पाठ 1.1 : जीवन नहीं मरा करता है

गोपाल दास 'नीरज'

पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से विभूषित ***गोपालदास 'नीरज'*** *का जन्म 4 जनवरी 1925 को इटावा (उत्तर प्रदेश) के पुरावली ग्राम में हुआ था। हिंदी भाषा के प्रमुख गीतकार और कवि नीरज ने कविता के साथ–साथ हिंदी सिनेमा के लिए लोकप्रिय गीत लिखे हैं–* ***कारवाँ गुजर गया, बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, ए भाई! जरा देख के चलो*** *आदि। जन सामान्य की दृष्टि में वे मानव प्रेम के अनन्य गायक हैं। उन्होंने अपनी मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति तथा सहज, सरल भाषा द्वारा हिंदी कविता को आम जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।* ***कारवाँ गुजर गया, प्राण गीत, आसावरी, बादर बरस गयो, दो गीत, नदी किनारे, नीरज की गीतिकाएँ, संघर्ष, विभावरी, नीरज की पाती, लहर पुकारे, मुक्तक, गीत भी अगीत*** *आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

छिप–छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है? नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी,
गीली उमर बनाने वालो!
डूबे बिना नहाने वालो!
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी

पहने सुबह धूप की धोती,
वस्त्र बदलकर आने वालो!
चाल बदलकर जाने वालो!
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

लाखों बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर,
लाखों बार कश्तियाँ डूबीं
चहल–पहल वो ही है तट पर,
तम की उमर बढ़ाने वालो!
लौ की आयु घटाने वालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर
उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफ़ानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की,
नफ़रत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

शब्दार्थ

नयन – आँख; **सेज** – बिस्तर, बिछावन; **अश्रु** – आँसू; **व्यर्थ** – अर्थहीन, अनावश्यक; **शिकन** – सिलवटें, सिकुड़न; **पनघट** – पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

अभ्यास

पाठ से

1. कविता में वे कौन–कौन सी पंक्तियाँ हैं जो हमारे अंदर आशा का संचार करती हैं?
2. 'मोती व्यर्थ लुटाने वालो!' पंक्ति में मोती से क्या आशय है?
3. 'तम की उमर बढ़ाने वालो! लौ की आयु घटाने वालो।' कविता की इन पंक्तियों में किस तरह के लोगों को संबोधित किया गया है और इनकी तुलना किससे की गई है?
4. ''लूट लिया माली ने उपवन, लुटी न लेकिन गंध फूल की'' कविता की इन पंक्तियों में कवि क्या संदेश देना चाह रहा है? अपने विचार लिखिए।
5. कविता के शीर्षक 'जीवन नहीं मरा करता' की उपयुक्तता पर अपने विचार लिखिए।

पाठ से आगे

1. कुछ सपनों के मर जाने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? अपने पक्ष में उदाहरण सहित तर्क दीजिए।
2. अपने या अपने आसपास के लोगों के जीवन की कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन कीजिए जिनके घटित होने पर भी जीवन के वृहद परिदृश्य प्रभावित नहीं होते।

AVHCXK

भाषा के बारे में

1. हिंदी भाषा में कई बार एक ही अर्थ के लिए एक से अधिक शब्द रूप इस्तेमाल किए जाते हैं, उदाहरण के लिए कविता में 'ज्यों' शब्द आया है, इसके लिए 'जैसे' शब्द का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इन्हें पर्यायवाची भी कहते हैं। निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची बताइए।

AVR8Z8

(क) अश्रु (ख) व्यर्थ (ग) नयन

(घ) चंद (ङ) कश्ती (च) तम

(छ) उपवन (ज) कोशिश

योग्यता विस्तार

1. गोपाल दास 'नीरज' के कुछ प्रसिद्ध गीतों को खोजकर पढ़िए और गाइए।
2. जीवन में आशा का संचार करने वाली रामधारी सिंह दिनकर की दी गई कविता को भी पढ़िए।

AW151V

यह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल दूर नहीं है
थक कर बैठ गए क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।
चिंगारी बन गई लहू की बूँद, गिरी जो पग से
चमक रहे पीछे मुड़ देखो चरण–चिह्न जगमग से।
शुरू हुई आराध्य भूमि यह क्लांत नहीं रे राही;
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से।
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है
थक कर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तम का,
सारी रात चले तुम, दुख झेलते कुलिश निर्मम का।
एक खेप है शेष, किसी विध पार उसे कर जाओ;
वह देखो, उस पार चमकता है मंदिर प्रियतम का।
आकर इतना पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है;
थककर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य–प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल–अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही,
अंबर पर घन बन छाएगा ही उच्छ्वास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गए क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

आराध्य – जिनकी पूजा की जाती हो; **क्लांत** – थका हुआ; **तूर** – नाद, घोष; **कुलिश** – आकाशीय बिजली, गाज; **खेप** – उतनी वस्तु जो एक बार लादी, ढोई या पहुँचाई जा सके; **अनल** – अग्नि; **अंबर** – आकाश; **उच्छ्वास** – साँस छोड़ना।

पाठ 1.2 : गुल्ली–डंडा

प्रेमचंद

AWA13I

प्रेमचंद *का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 में बनारस जिले के लमही ग्राम में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। प्रेमचंद की कहानियाँ मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।* ***सेवासदन, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गबन, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गोदान*** *इनके प्रमुख उपन्यास हैं। कथा–साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार के गद्य लेखन के साथ ही* ***हंस, माधुरी, जागरण*** *जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं का संपादन भी किया। प्रेमचंद, साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते हैं। उनके कथा साहित्य में तत्कालीन समाज की जीती–जागती बहुरंगी तस्वीर है जिसमें किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति, स्त्रियों की दुर्दशा तथा सामाजिक विषमताओं का यथार्थवादी चित्रण है। सन् 1936 में इस महान कथाकार का देहांत हो गया।*

हमारे अंगरेजी दोस्त मानें या न मानें, मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली–डंडा सब खेलों का राजा है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली–डंडा खेलते देखता हूँ, तो जी लोट–पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लॉन की जरूरत, न कोर्ट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली, और दो आदमी भी आ जाएँ, तो खेल शुरू हो गया।

विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं। जब तक कम–से–कम एक सैकड़ा न खर्च कीजिए, खिलाड़ियों में शुमार ही नहीं हो पाता। यहाँ गुल्ली–डंडा है कि बिना हर्र–फिटकरी के चोखा रंग देता है, पर हम अंगरेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गई। स्कूलों में हरेक लड़के से तीन–चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ, जो बिना दाम–कौड़ी के खेले जाते हैं। अंगरेजी खेल उनके लिए हैं, जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मढ़ते हो? ठीक है, गुल्ली से आँख फूट जाने का भय रहता है, तो क्या क्रिकेट से सिर फूट जाने, तिल्ली फट जाने, टाँग टूट जाने का भय नहीं रहता! अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है, तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे। यह अपनी–अपनी रुचि है। मुझे गुल्ली ही सब खेलों से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियों में गुल्ली ही सबसे मीठी है।

वह प्रातःकाल घर से निकल जाना, वह पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली–डंडे बनाना, वह उत्साह, वह खिलाड़ियों के जमघट, वह पदना और पदाना, वह लड़ाई–झगड़े, वह सरल स्वभाव, जिससे छूत–अछूत, अमीर–गरीब का बिल्कुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोंचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब .... जब ...। घरवाले बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे वेग से रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं, अम्माँ की दौड़ केवल द्वार तक है, लेकिन उनकी विचारधारा में मेरा अंधकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है और मैं हूँ कि पदाने में मस्त हूँ, न नहाने की सुधि है, न खाने की। गुल्ली है तो जरा–सी, पर उसमें दुनिया–भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनंद भरा हुआ है।

मेरे हमजोलियों में एक लड़का गया नाम का था। मुझसे दो–तीन साल बड़ा होगा। दुबला, बंदरों की–सी लंबी–लंबी, पतली–पतली उँगलियाँ, बंदरों की–सी चपलता, वही झल्लाहट। गुल्ली कैसी ही हो, पर इस तरह लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ों पर लपकती है। मालूम नहीं, उसके माँ–बाप थे या नहीं, कहाँ रहता था, क्या खाता था; पर था हमारे गुल्ली–क्लब का चैंपियन। जिसकी तरफ वह आ जाए, उसकी जीत निश्चित थी। हम सब उसे दूर से आते देख, उसका दौड़कर स्वागत करते थे और अपना गोइयाँ बना लेते थे।

एक दिन मैं और गया दो ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था। मैं पद रहा था, मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन–भर मस्त रह सकते है; पदना एक मिनट का भी अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चलीं, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र–विहित न होने पर भी क्षम्य हैं, लेकिन गया अपना दाँव लिए बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।

मैं घर की ओर भागा। अनुनय–विनय का कोई असर न हुआ था।

गया ने मुझे दौड़कर पकड़ लिया और डंडा तानकर बोला–मेरा दाँव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादुर बनके, पदने के बेर क्यों भागे जाते हो।

''तुम दिन–भर पदाओ तो मैं दिन–भर पदता रहूँ?''

''हाँ, तुम्हें दिन–भर पदना पड़ेगा।''

''न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ?''

''हाँ! मेरा दाँव दिए बिना कहीं नहीं जा सकते।''

''मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?''

''हाँ, मेरे गुलाम हो।''

''मैं घर जाता हूँ, देखूँ मेरा क्या कर लेते हो!''

''घर कैसे जाओगे; कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, दाँव लेंगे।''

'अच्छा, कल मैंने अमरूद खिलाया था। वह लौटा दो।'

'वह तो पेट में चला गया।'

'निकालो पेट से। तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?'

'अमरूद तुमने दिया, तब मैंने खाया। मैं तुमसे माँगने न गया था।'

'जब तक मेरा अमरूद न दोगे, मैं दाँव न दूँगा।'

मैं समझता था, न्याय मेरी ओर है। आखिर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरूद खिलाया होगा। कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया, तो फिर उसे मुझसे दाँव लेने का क्या अधिकार है? रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं, यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जाएगा? अमरूद पैसे के पाँचवाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था।

गया ने मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा–मेरा दाँव देकर जाओ, अमरूद–समरूद मैं नहीं जानता।

मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था। मैं हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था। वह मुझे जाने न देता! मैंने उसे गाली दी, उसने उससे कड़ी गाली दी, और गाली–ही नहीं, एक चाँटा जमा दिया। मैंने उसे दाँत काट लिया। उसने मेरी पीठ पर डंडा जमा दिया। मैं रोने लगा। गया मेरे इस अस्त्र का मुकाबला न कर सका। मैंने तुरंत आँसू पोंछ डाले, डंडे की चोट भूल गया और हँसता हुआ घर जा पहुँचा।

उन्हीं दिनों पिताजी का वहाँ से तबादला हो गया। नई दुनिया देखने की खुशी में ऐसा फूला कि अपने हमजोलियों से बिछुड़ जाने का बिलकुल दुःख न हुआ। पिताजी दुःखी थे। वह बड़ी आमदनी की जगह थी। अम्माजी भी दुःखी थीं। यहाँ सब चीज सस्ती थीं, और मुहल्ले की स्त्रियों से घराँव–सा हो गया था, लेकिन मैं मारे खुशी के फूला न समाता था। लड़कों में जीट उड़ा रहा था, वहाँ ऐसे घर थोड़े ही होते हैं। ऐसे–ऐसे ऊँचे घर हैं कि आसमान से बातें करते हैं। वहाँ के अंगरेजी स्कूल में कोई मास्टर लड़कों को पीटे, तो उसे जेहल हो जाए। मेरे मित्रों की फैली हुई आँखें और चकित मुद्रा बतला रही थीं कि मुझसे उनकी निगाह में कितनी स्पर्द्धा हो रही थी! मानो कह रहे थे–तू भाग्यवान है भाई, जाओ। हमें तो इसी ऊजड़ ग्राम में जीना भी है और मरना भी।

बीस साल गुजर गए। मैंने इंजीनियरी पास की और उसी जिले का दौरा करता हुआ उसी कस्बे में पहुँचा और डाकबँगले में ठहरा। उस स्थान को देखते ही इतनी मधुर बाल–स्मृतियाँ हृदय में जाग उठीं कि मैंने छड़ी उठाई और कस्बे की सैर करने निकला। आँखें किसी प्यासे पथिक की भाँति बचपन के उन क्रीड़ा–स्थलों को देखने के लिए व्याकुल हो रही थीं; पर उस परिचित नाम के सिवा वहाँ और कुछ परिचित न था। जहाँ खँडहर था, वहाँ पक्के मकान खड़े थे। जहाँ बरगद का पुराना पेड़ था, वहाँ अब एक सुन्दर बगीचा था। स्थान की काया पलट हो गई थी। अगर उसके नाम और स्थिति का ज्ञान न होता, तो मैं उसे पहचान भी न सकता। बचपन की संचित और अमर स्मृतियाँ बाँहें खोले अपने उन पुराने मित्रों से गले मिलने को अधीर हो रही थीं; मगर वह दुनिया बदल गई थी। ऐसा जी होता था कि उस धरती से लिपटकर रोऊँ और कहूँ, तुम मुझे भूल गई! मैं तो अब भी

तुम्हारा वही रूप देखना चाहता हूँ।

सहसा एक खुली जगह में मैंने दो–तीन लड़कों को गुल्ली–डंडा खेलते देखा। एक क्षण के लिए मैं अपने को बिल्कुल भूल गया। भूल गया कि मैं एक ऊँचा अफसर हूँ, साहबी ठाठ में, रौब और अधिकार के आवरण में।

जाकर एक लड़के से पूछा–क्यों बेटे, यहाँ कोई गया नाम का आदमी रहता है?

'हाँ, है तो।'

'जरा उसे बुला सकते हो?'

लड़का दौड़ता हुआ गया और एक क्षण में एक पाँच हाथ के काले देव को साथ लिए आता दिखाई दिया। मैं दूर से ही पहचान गया। उसकी ओर लपकना चाहता था कि उसके गले लिपट जाऊँ, पर कुछ सोचकर रह गया। बोला–कहो गया, मुझे पहचानते हो?

गया ने झुककर सलाम किया–हाँ मालिक, भला पहचानूँगा क्यों नहीं! आप मजे में हो?

'बहुत मजे में। तुम अपनी कहो।'

'डिप्टी साहब का साईस हूँ।'

'मतई, मोहन, दुर्गा सब कहाँ हैं? कुछ खबर है?'

'मतई तो मर गया, दुर्गा और मोहन दोनों डाकिया हो गए हैं। आप?'

'मैं तो जिले का इंजीनियर हूँ।'

'सरकार तो पहले ही बड़े जहीन थे?'

'अब कभी गुल्ली–डंडा खेलते हो?'

गया ने मेरी ओर प्रश्न–भरी आँखों से देखा–अब गुल्ली–डंडा क्या खेलूँगा सरकार, अब तो धंधे से छुट्टी नहीं मिलती।

'आओ, आज हम–तुम खेलें। तुम पदाना, हम पदेंगे। तुम्हारा एक दाँव हमारे ऊपर है। वह आज ले लो।'

गया बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। वह ठहरा टके का मजदूर, मैं एक बड़ा अफसर। हमारा और उसका क्या जोड़? बेचारा झेंप रहा था। लेकिन मुझे भी कुछ कम झेंप न थी; इसलिए नहीं कि मैं गया के साथ खेलने जा रहा था, बल्कि इसलिए कि लोग इस खेल को अजूबा समझकर इसका तमाशा बना लेंगे और अच्छी–खासी भीड़ लग जाएगी। उस भीड़ में वह आनंद कहाँ रहेगा, पर खेले बगैर तो रहा नहीं जाता। आखिर निश्चय हुआ कि दोनों जने बस्ती से बहुत दूर खेलेंगे और बचपन की उस मिठाई को खूब रस ले–लेकर खाएँगे। मैं गया को लेकर डाकबँगले पर आया और मोटर में बैठकर दोनों मैदान की ओर चले। साथ में एक कुल्हाड़ी ले ली। मैं गंभीर भाव धारण किए हुए था, लेकिन गया इसे अभी तक मजाक ही समझ रहा था। फिर भी उसके मुख पर उत्सुकता

या आनंद का कोई चिह्न न था। शायद वह हम दोनों में जो अंतर हो गया था, यही सोचने में मगन था।

मैंने पूछा–तुम्हें कभी हमारी याद आती थी गया? सच कहना।

गया झेंपता हुआ बोला–मैं आपको याद करता हजूर, किस लायक हूँ। भाग में आपके साथ कुछ दिन खेलना बदा था; नहीं तो मेरी क्या गिनती?

मैंने कुछ उदास होकर कहा–लेकिन मुझे तो बराबर, तुम्हारी याद आती थी। तुम्हारा वह डंडा, जो तुमने तानकर जमाया था, याद है न?

गया ने पछताते हुए कहा–वह लड़कपन था सरकार, उसकी याद न दिलाओ।

'वाह! वह मेरे बाल–जीवन की सबसे रसीली याद है। तुम्हारे उस डंडे में जो रस था, वह तो अब न आदर–सम्मान में पाता हूँ, न धन में।'

इतनी देर में हम बस्ती से कोई तीन मील निकल आए। चारों तरफ सन्नाटा है। पश्चिम ओर कोसों तक भीमताल फैला हुआ है, जहाँ आकर हम किसी समय कमल पुष्प तोड़ ले जाते थे और उसके झूमक बनाकर कानों में डाल लेते थे। जेठ की संध्या केसर में डूबी चली आ रही है। मैं लपककर एक पेड़ पर चढ़ गया और एक टहनी काट लाया। चटपट गुल्ली–डंडा बन गया।

खेल शुरू हो गया। मैंने गुच्ची में गुल्ली रखकर उछाली। गुल्ली गया के सामने से निकल गई। उसने हाथ लपकाया, जैसे मछली पकड़ रहा हो। गुल्ली उसके पीछे जाकर गिरी। यह वही गया है, जिसके हाथों में गुल्ली जैसे आप ही आकर बैठ जाती थी। वह दाहिने–बाएँ कहीं हो, गुल्ली उसकी हथेली में ही पहुँचती थी। जैसे गुल्लियों पर वशीकरण डाल देता हो। नई गुल्ली, पुरानी गुल्ली, छोटी गुल्ली, बड़ी गुल्ली, नोकदार गुल्ली, सपाट गुल्ली सभी उससे मिल जाती थी। जैसे उसके हाथों में कोई चुंबक हो, गुल्लियों को खींच लेता हो; लेकिन आज गुल्ली को उससे वह प्रेम नहीं रहा। फिर तो मैंने पदाना शुरू किया। मैं तरह–तरह की धाँधलियाँ कर रहा था। अभ्यास की कसर बेईमानी से पूरी कर रहा था। हुच जाने पर भी डंडा खेले जाता था। हालाँकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी। गुल्ली पर ओछी चोट पड़ती और वह जरा दूर पर गिर पड़ती, तो मैं झपटकर उसे खुद उठा लेता और दोबारा टाँड़ लगाता। गया यह सारी बे–कायदगियाँ देख रहा था; पर कुछ न बोलता था, जैसे उसे वह सब कायदे–कानून भूल गए। उसका निशाना कितना अचूक था। गुल्ली उसके हाथ से निकलकर टन से डंडे से आकर लगती थी। उसके हाथ से छूटकर उसका काम था डंडे से टकरा जाना, लेकिन आज वह गुल्ली डंडे में लगती ही नहीं! कभी दाहिने जाती है, कभी बाएँ, कभी आगे, कभी पीछे।

आध घंटे पदाने के बाद एक गुल्ली डंडे में आ लगी। मैंने धाँधली की–गुल्ली डंडे में नहीं लगी। बिल्कुल पास से गई; लेकिन लगी नहीं।

गया ने किसी प्रकार का असंतोष प्रकट नहीं किया।

'न लगी होगी।'

'डंडे में लगती तो क्या मैं बेईमानी करता?'

'नहीं भैया, तुम भला बेईमानी करोगे?'

बचपन में मज़ाल था कि मैं ऐसा घपला करके जीता बचता! यही गया गर्दन पर चढ़ बैठता, लेकिन आज मैं उसे कितनी आसानी से धोखा दिए चला जाता था। गधा है! सारी बातें भूल गया।

सहसा गुल्ली फिर डंडे से लगी और इतनी जोर से लगी, जैसे बंदूक छूटी हो। इस प्रमाण के सामने अब किसी तरह की धाँधली करने का साहस मुझे इस वक्त भी न हो सका, लेकिन क्यों न एक बार सबको झूठ बताने की चेष्टा करूँ? मेरा हरज ही क्या है। मान गया तो वाह–वाह, नहीं दो–चार हाथ पदना ही तो पड़ेगा। अँधेरे का बहाना करके जल्दी से छुड़ा लूँगा। फिर कौन दाँव देने आता है।

गया ने विजय के उल्लास में कहा–लग गई, लग गई। टन से बोली।

मैंने अनजान बनने की चेष्टा करके कहा–तुमने लगते देखा? मैंने तो नहीं देखा।

'टन से बोली है सरकार!'

'और जो किसी ईंट से टकरा गई हो?'

मेरे मुख से यह वाक्य उस समय कैसे निकला, इसका मुझे खुद आश्चर्य है। इस सत्य को झुठलाना वैसा ही था, जैसे दिन को रात बताना। हम दोनों ने गुल्ली को डंडे में जोर से लगते देखा था; लेकिन गया ने मेरा कथन स्वीकार कर लिया।

'हाँ, किसी ईंट में ही लगी होगी। डंडे में लगती तो इतनी आवाज न आती।'

मैंने फिर पदाना शुरू कर दिया; लेकिन इतनी प्रत्यक्ष धाँधली कर लेने के बाद गया की सरलता पर मुझे दया आने लगी; इसीलिए जब तीसरी बार गुल्ली डंडे में लगी, तो मैंने बड़ी उदारता से दाँव देना तय कर लिया।

गया ने कहा–अब तो अँधेरा हो गया है भैया, कल पर रखो।

मैंने सोचा, कल बहुत–सा समय होगा, यह न जाने कितनी देर पदाए, इसलिए इसी वक्त मुआमला साफ कर लेना अच्छा होगा।

'नहीं, नहीं। अभी बहुत उजाला है। तुम अपना दाँव ले लो।'

'गुल्ली सूझेगी नहीं।'

'कुछ परवाह नहीं।'

गया ने पदाना शुरू किया; पर उसे अब बिलकुल अभ्यास न था। उसने दो बार टाँड़ लगाने का इरादा किया; पर दोनों ही बार हुच गया। एक मिनिट से कम में वह दाँव खो बैठा। मैंने अपनी हृदय की विशालता का परिचय दिया।

'एक दाँव और खेल लो। तुम तो पहले ही हाथ में हुच गए।'

'नहीं भैया, अब अँधेरा हो गया।'

'तुम्हारा अभ्यास छूट गया। कभी खेलते नहीं?'

'खेलने का समय कहाँ मिलता है भैया!'

हम दोनों मोटर पर जा बैठे और चिराग जलते–जलते पड़ाव पर पहुँच गए। गया चलते–चलते बोला–कल यहाँ गुल्ली–डंडा होगा। सभी पुराने खिलाड़ी खेलेंगे। तुम भी आओगे? जब तुम्हें फुरसत हो, तभी खिलाड़ियों को बुलाऊँ।

मैंने शाम का समय दिया और दूसरे दिन मैच देखने गया। कोई दस–दस आदमियों की मंडली थी। कई मेरे लड़कपन के साथी निकले! अधिकांश युवक थे, जिन्हें मैं पहचान न सका। खेल शुरू हुआ। मैं मोटर पर बैठा–बैठा तमाशा देखने लगा। आज गया का खेल, उसका नैपुण्य देखकर मैं चकित हो गया। टाँड़ लगाता, तो गुल्ली आसमान से बातें करती। कल की–सी वह झिझक, वह हिचकिचाहट, वह बेदिली आज न थी। लड़कपन में जो बात थी, आज उसने प्रौढ़ता प्राप्त कर ली थी। कहीं कल इसने मुझे इस तरह पदाया होता, तो मैं जरूर रोने लगता। उसके डंडे की चोट खाकर गुल्ली दो सौ गज की खबर लाती थी।

पदने वालों में एक युवक ने कुछ धाँधली की। उसने अपने विचार में गुल्ली लपक ली थी। गया का कहना था–गुल्ली जमीन में लगकर उछली थी। इस पर दोनों में ताल ठोकने की नौबत आई है। युवक दब गया। गया का तमतमाया हुआ चेहरा देखकर डर गया। अगर वह दब न जाता, तो जरूर मार–पीट हो जाती।

मैं खेल में न था; पर दूसरों के इस खेल में मुझे वही लड़कपन का आनंद आ रहा था, जब हम सब कुछ भूलकर खेल में मस्त हो जाते थे। अब मुझे मालूम हुआ कि कल गया ने मेरे साथ खेला नहीं, केवल खेलने का बहाना किया। उसने मुझे दया का पात्र समझा। मैंने धाँधली की, बेईमानी की, पर उसे जरा भी क्रोध न आया। इसलिए कि वह खेल न रहा था, मुझे खेला रहा था, मेरा मन रख रहा था। वह मुझे पदाकर मेरा कचूमर नहीं निकालना चाहता था। मैं अब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गई है। मैं अब उसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।

शब्दार्थ

व्यसन – बुरी आदत; **थापी** – कुटेला, लकड़ी से बना बैट जैसा दिखने वाला; **गोइयाँ** – साथी, दोस्त; **जमघट** – लोगों की भीड़; **वशीकरण** – वश में करना; **घराँव** – घनिष्ठता, परस्पर मेलजोल का भाव, घर का सा संबंध;

सुधि – याद, स्मृति; **शास्त्र–विहित** – शास्त्र के अनुसार; **शास्त्र–सम्मत** – शास्त्र द्वारा समर्थित; **बेर** – समय; **बे–कायदगियाँ** – जो नियम या कायदे के विरूद्ध हो; **गुच्ची** – गुल्ली डंडा खेलने के लिए बनाया जाने वाला छोटा गड्ढा; **टाँड़** – गुल्ली पर किया गया आघात; **सलूक** – व्यवहार; **साईस** – ताँगा हाँकने वाला; **ज़हीन** – जिसका ज़ेहन तेज हो, मेधावी, प्रतिभावान, समझदार, बुद्धिमान; **जीट** – मौज; **पदना** – दाँव देना; **पदाना** – दाँव लेना।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि गुल्ली–डंडा सब खेलों का राजा है?
2. ''मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था'' लेखक खेल में पराजित होने के बाद भी अपनी ओर 'न्याय का बल' क्यों मानता है और 'वह' (गया) को 'अन्याय पर डटा' क्यों कहता है?
3. पिताजी अपने तबादले से दुःखी थे, जबकि लेखक खुश था। क्यों?
4. बीस साल बाद जब लेखक फिर से उस क़स्बे में पहुँचा, तो उस क़स्बे और लेखक दोनों में क्या–क्या बदलाव हो चुके थे?
5. लेखक के साथ खेलते हुए गया के मन में गुल्ली–डंडा के प्रति वही जोश और उत्साह देखने को नहीं मिला, जो बचपन में हुआ करता था। गया के व्यवहार में इस परिवर्तन के पीछे कौन से कारण रहे होंगे?
6. निम्नांकित कथनों के क्या अभिप्राय हैं :–

   (क) ''वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।''

   (ख) ''हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे।''

पाठ से आगे

AWIH56

1. गुल्ली–डंडा एक ऐसा भारतीय खेल है जिसके लिए पैसे खर्चने की जरूरत नहीं पड़ती। अपने आसपास/परिवेश में प्रचलित ऐसे खेलों की सूची बनाइए। वर्तमान समाज में इन खेलों के प्रति घटते आकर्षण के क्या कारण हो सकते हैं?

2. गुल्ली–डंडा कहानी में इस खेल से जुड़े कुछ शब्द आए हैं; जैसे– दाँव, पदना/पदाना, हुच, गुल्ली आदि। अपने आसपास प्रचलित खेलों से जुड़ी शब्दावलियों की एक सूची बनाइए–

खेल के नाम	खेल से जुड़े शब्द

भाषा के बारे में

1. सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश मुहावरे तथा वाक्य लोकोक्ति कहे जाते हैं। लोकोक्ति लम्बे लोक अनुभव को व्यक्त करने वाला सूत्र वाक्य होता है। कहानी में कई मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है; जैसे–लोट–पोट हो जाना, हर्रे लगे न फिटकरी रंग चोखा आए, पिंड न छोड़ना आदि। इन मुहावरों के अलावा कहानी से अन्य मुहावरे भी ढूँढ़िए और उनका वाक्य में प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. कहानी में 'बचपन', 'लड़कपन' जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'बच्चा' और 'लड़का' में 'पन' प्रत्यय जोड़ने से यह नया शब्द बना है। 'बच्चा' और 'लड़का' जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं, जबकि 'बचपन' और 'लड़कपन' भाववाचक संज्ञा शब्द हैं। कहानी से जातिवाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर उसका भाववाचक रूप बनाइए–

उदाहरण

जातिवाचक संज्ञा शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द
आदमी	आदमियत
मास्टर	मास्टरी

3. 'सोहन बस्तर में रहता है और **वह** रोज स्कूल जाता है।'

इस वाक्य में **वह** निश्चयवाचक सर्वनाम है, जिसका प्रयोग सोहन के लिए हुआ है। जबकि कहानी से ली गई अग्रलिखित वाक्यों में **वह** का प्रयोग सर्वनाम के रूप में किसी व्यक्ति को सूचित नहीं करता है। हिन्दी भाषा में **वह** सर्वनाम शब्द का प्रयोग कई बार दूर या अनुपस्थित व्यक्ति को सूचित करने के अतिरिक्त भाव या विचार के लिए भी होता है। जैसे–

वह प्रातःकाल घर से निकल जाना, **वह** पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली–डंडे बनाना, **वह** उत्साह, **वह** खिलाड़ियों के जमघट, **वह** पदना और पदाना, **वह** लड़ाई–झगड़े, **वह** सरल स्वभाव, जिससे छूत–अछूत, अमीर–गरीब का बिल्कुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोंचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब .... जब ...

- उपर्युक्त वाक्यों की तरह **वह** का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।
- उसी वक्त भूलेगा जब .... जब ... वाक्य को पूरा कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों से जुड़ी जानकारियों को पत्र–पत्रिकाओं से इकट्ठा कीजिए और उनके जीवन से जुड़ी घटनाओं और प्रसंगों को कक्षा में साझा कीजिए।
2. 'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे ख़राब' समाज में प्रचलित इस मान्यता से आप कहाँ तक सहमत हैं। इस पर कक्षा में वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
3. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित निबंध **खेल भी शिक्षा ही है** को पुस्तकालय/इंटरनेट/शिक्षक की सहायता से ढूँढ़कर पढ़िए और सहपाठियों से इस पर चर्चा कीजिए।
4. क्रिकेट खेलने के लिए किन–किन सामग्रियों की आवश्यकता होती है। इन सामग्रियों की बाजार में कीमत पता कीजिए तथा किसी भी देशी/स्थानीय खेल में आने वाले खर्च से इसकी तुलना कीजिए।

AX2N8G

●●●

पाठ 1.3 : अपूर्व अनुभव

तेत्सुको कुरोयानागी

*यूनिसेफ की सद्भावना दूत रहीं **तेत्सुको कुरोयानागी** का जन्म 9 अगस्त 1933 को टोकियो, जापान में हुआ था। मूलतः जापानी भाषा में लिखी गई पुस्तक **तोत्तो–चान** विश्व साहित्य की एक चर्चित कृति है। इसका अनुवाद विश्व की कई भाषाओं में हो चुका है। यह एक ऐसी अद्भुत स्कूल तोमोए और उसमें पढ़नेवाले बच्चों की कहानी है, जिनके लिए रेल के डिब्बे कक्षाएँ थीं, गहरी जड़ोंवाले पेड़ स्कूल का गेट, पेड़ की शाखा बच्चों के खेलने के कोने। इस अनोखे स्कूल के संस्थापक थे श्री कोबायाशी। लेखिका स्वयं इस स्कूल की छात्रा थीं। उन्हीं के बचपन के अनुभवों पर आधारित पुस्तक **तोत्तो–चान** का एक अंश है 'अपूर्व अनुभव'।*

सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद तोत्तो–चान के लिए एक बड़ा साहस करने का दिन आया। इस दिन उसे यासुकी–चान से मिलना था। इस भेद का पता न तो तोत्तो–चान के माता–पिता को था न ही यासुकी–चान को। उसने यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ने का न्यौता दिया था।

तोमोए में हरेक बच्चा बाग के एक–एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। तोत्तो–चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जाने वाली सड़क के पास था। बड़ा सा पेड़ था उसका। चढ़ने जाओ तो पैर फिसल–फिसल जाते, पर ठीक से चढ़ने पर जमीन से कोई छह फुट की ऊँचाई पर एक द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। बिल्कुल किसी झूले–सी आरामदेह जगह थी यह। तोत्तो–चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद ऊपर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह सामने दूर तक, ऊपर आकाश को, या नीचे सड़क पर चलते लोगों को देखा करती थी।

बच्चे अपने–अपने पेड़ को निजी संपत्ति मानते थे। किसी दूसरे के पेड़ पर चढ़ना हो तो उससे पहले पूरी शिष्टता से, ''माफ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?'' पूछना पड़ता था।

यासुकी–चान को पोलियो था, इसलिए वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ पाता था और न किसी पेड़ को निजी संपत्ति मानता था। अतः तोत्तो–चान ने उसे अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था। पर यह बात उन्होंने किसी से नहीं कही, क्योंकि अगर बड़े सुनते तो जरुर डाँटते।

घर से निकलते समय तोत्तो–चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी–चान के घर डेनेनचोफु जा रही है। चूँकि वह झूठ बोल रही थी, इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। अपनी नजरें वह जूतों की फीतों पर ही गड़ाए रही। रॉकी उसके पीछे–पीछे स्टेशन तक आया। जाने से पहले उसे सच बताए बिना तोत्तो–चान से रहा नहीं गया।

''मैं यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ने देने वाली हूँ।'' उसने बताया।

जब तोत्तो–चान स्कूल पहुँची तो रेल–पास उसके गले के आसपास हवा में उड़ रहा था। यासुकी–चान उसे मैदान मे क्यारियों के पास मिला। गर्मी की छुट्टियों के कारण सब सूना पड़ा था। यासुकी–चान उससे कुल जमा एक ही वर्ष बड़ा था, पर तोत्तो–चान को वह अपने से बहुत बड़ा लगता था।

जैसे ही यासुकी–चान ने तोत्तो–चान को देखा, वह पैर घसीटता हुआ उसकी ओर बढ़ा। उसके हाथ अपनी चाल को स्थिर करने के लिए दोनों ओर फैले हुए थे। तोत्तो–चान उत्तेजित थी। वे दोनों आज कुछ ऐसा जो करने वाले थे जिसका भेद किसी को भी न पता था। वह उत्तेजना में ठिठिया कर हँसने लगी। यासुकी–चान भी हँसने लगा।

तोत्तो–चान यासुकी–चान को अपने पेड़ की ओर ले गयी। और उसके बाद वह तुरंत चौकीदार के छप्पर की ओर भागी, जैसा उसने रात को ही तय कर लिया था। वहाँ से वह एक सीढ़ी घसीटती हुई लाई। उसे तने के सहारे ऐसे लगाया, जिससे वह द्विशाखा तक पहुँच जाए। वह फुर्ती से ऊपर चढ़ी और सीढ़ी के किनारे को पकड़ लिया। तब उसने पुकारा, ''ठीक है, अब ऊपर चढ़ने की कोशिश करो।''

यासुकी–चान के हाथ–पैर इतने कमजोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी बिना सहारे के चढ़ नहीं पाया। इस पर तोत्तो–चान नीचे उतर आई और यासुकी–चान को पीछे से धकियाने लगी। पर तोत्तो–चान थी छोटी और नाजुक सी, इससे अधिक सहायता क्या करती। यासुकी–चान ने अपना पैर सीढ़ी पर से हटा लिया और हताशा से सिर झुका कर खड़ा हो गया। तोत्तो–चान को पहली बार लगा कि काम उतना आसान नहीं है जितना वह सोचे बैठी थी। अब क्या करे वह?

यासुकी–चान उसके पेड़ पर चढ़े, यह उसकी हार्दिक इच्छा थी। यासुकी–चान के मन में भी उत्साह था। वह उसके सामने गई। उसका लटका चेहरा इतना उदास था कि तोत्तो–चान को उसे हँसाने के लिए गाल फुलाकर तरह–तरह के चेहरे बनाने पड़े।

''ठहरो, एक बात सूझी है।''

वह फिर चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी और हरेक चीज उलट–पुलट कर देखने लगी। आखिर उसे एक तिपाई–सीढ़ी मिली जिसे थामे रहना भी जरुरी नहीं था।

वह तिपाई–सीढ़ी को घसीटकर ले आई तो अपनी शक्ति पर हैरान होने लगी। तिपाई की ऊपरी सीढ़ी द्विशाखा तक पहुँच रही थी।

''देखो, अब डरना मत,'' उसने बड़ी बहन की सी आवाज में कहा, ''यह डगमगाएगी नहीं।''

यासुकी–चान ने घबराकर तिपाई–सीढ़ी की तरफ देखा। तब उसने पसीने से तरबतर तोत्तो–चान को देखा। यासुकी–चान को भी काफी पसीना आ रहा था। उसने पेड़ की ओर देखा और तब निश्चय के साथ पाँव उठाकर पहली सीढ़ी पर रखा।

उन दोनों को यह बिल्कुल भी पता नहीं चला कि कितना समय यासुकी–चान को ऊपर तक चढ़ने में लगा। सूरज का ताप उन पर पड़ रहा था, पर दोनों का ध्यान यासुकी–चान के ऊपर तक पहुँचने में रमा था। तोत्तो–चान नीचे से उसका एक–एक पैर सीढ़ी पर धरने में मदद कर रही थी। अपने सिर से वह उसके पिछले हिस्से को भी स्थिर करती रही। यासुकी–चान पूरी शक्ति के साथ जूझ रहा था, और आखिरकार वह ऊपर पहुँच गया।

''हुर्रे !''

पर अचानक सारी की हुई मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो–चान तो सीढ़ी पर से द्विशाखा पर छलाँग लगा कर पहुँच गई, पर यासुकी–चान को सीढ़ी से पेड़ पर लाने की हर कोशिश बेकार रही। यासुकी–चान सीढ़ी थामे तोत्तो–चान की ओर ताकने लगा। तोत्तो–चान की रुलाई छूटने को हुई। उसने चाहा था कि यासुकी–चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नई–नई चीजें दिखाए।

पर वह रोई नहीं। उसे डर था कि उसके रोने पर यासुकी–चान भी रो पड़ेगा। उसने यासुकी–चान की पोलियो से पिचकी और अकड़ी उँगलियों वाला हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसके खुद के हाथ से वह बड़ा था, उँगलियाँ भी लंबी थीं। देर तक तोत्तो–चान उसका हाथ थामे रही। तब बोली, ''तुम लेट जाओ, मैं तुम्हें पेड़ पर खींचने की कोशिश करती हूँ।''

उस समय द्विशाखा पर खड़ी तोत्तो–चान द्वारा यासुकी–चान को पेड़ की ओर खींचते अगर कोई बड़ा देखता तो वह जरूर डर के मारे चीख उठता। उसे वे सच में जोखिम उठाते ही दिखाई देते। पर यासुकी–चान

को तोत्तो–चान पर पूरा भरोसा था और वह खुद भी यासुकी–चान के लिए भारी खतरा उठा रही थी। अपने नन्हे–नन्हे हाथों से वह पूरी ताकत से यासुकी–चान को खींचने लगी। बादल का एक बड़ा टुकड़ा बीच–बीच में छाया करके उन्हें कड़कती धूप से बचा रहा था।

काफी मेहनत के बाद दोनों आमने–सामने पेड़ की द्विशाखा पर थे। पसीने से तरबतर अपने बालों को चेहरे पर से हटाते हुए तोत्तो–चान ने सम्मान से झुककर कहा, ''मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत है।''

यासुकी–चान डाल के सहारे खड़ा था। कुछ झिझकता हुआ वह मुस्कराया। तब उसने पूछा, ''क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?''

उस दिन यासुकी–चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी जिसे उसने पहले कभी न देखा था। ''तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना,'' यासुकी–चान ने खुश होते हुए कहा।

वे बड़ी देर तक पेड़ पर बैठे–बैठे इधर–उधर की गप्पें लड़ाते रहे।

''मेरी बहन अमरीका में है। उसने बताया है कि वहाँ एक चीज होती है– टेलीविजन।'' यासुकी–चान उमंग से भरा बता रहा था। ''वह कहती है कि जब वह जापान में आ जाएगा, तो हम घर बैठे–बैठे ही सूमो–कुश्ती देख सकेंगे। वह कहती है कि टेलीविजन एक डिब्बे जैसा होता है।''

तोत्तो–चान उस समय यह तो न समझ पाई कि यासुकी–चान के लिए, जो कहीं भी दूर तक चल नहीं सकता था, घर बैठे चीजों को देख लेने के क्या अर्थ होंगे।

वह तो यह ही सोचती रही कि सूमो पहलवान घर में रखे किसी डिब्बे में कैसे समा जाएँगे? उनका आकार तो बड़ा होता है। पर बात उसे बड़ी लुभावनी लगी। उन दिनों टेलीविजन के बारे में कोई नहीं जानता था। पहले–पहले यासुकी–चान ने ही तोत्तो–चान को उसके बारे में बताया था।

पेड़ मानो गीत गा रहे थे और दोनों बेहद खुश थे। यासुकी–चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था।

शब्दार्थ

शिविर – तंबू आदि लगाकर बनाया गया यात्री निवास, अस्थाई पड़ाव; **सभागार** – वह स्थान जहाँ सभा होती है, सभाकक्ष; **भेद** – राज की बात, गुप्त बात; **द्विशाखा** – पेड़ की दो शाखाएँ या डाल; **हताशा** – आशा का न रहना, निराशा।

अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ पर चढ़ना एक सुखद अनुभव है, इस पर अपने विचार रखिए और बताइए कि यासुकी–चान इस अपूर्व अनुभव से वंचित क्यों था?
2. ''तोत्तो–चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी–चान के घर डेनेनचोफु जा रही है' यह बात कहते हुए उसकी नजरें जूतों के फीते पर क्यों गड़ी रहीं? वह कौन सी स्थितियाँ होती हैं, जब आप अपने बड़ों से आँखें चुराते हैं। लिखिए।
3. तोत्तो–चान की हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी–चान उसके पेड़ पर चढ़े, आपके अनुसार वह कौन–कौन से कारण रहे होंगे जिसकी वजह से तोत्तो–चान उसे अपने पेड़ पर चढ़ाना चाहती थी?
4. ''तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना'' यासुकी–चान के इस कथन को ध्यान में रखते हुए पेड़ पर चढ़ने के बाद हुई खुशी को अपने शब्दों में लिखिए।
5. तोत्तो–चान द्वारा यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाना एक जोखिम भरा काम था। आपके अनुसार तोत्तो–चान का यह कार्य उचित था या अनुचित? अपने विचार रखिए।
6. दृढ़निश्चय और कठिन परिश्रम से पेड़ पर अपने मित्र को चढ़ाने के बाद तोत्तो–चान और यासुकी–चान को जिस प्रकार की खुशी हुई, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
7. ''यासुकी–चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था'' सोचकर बताइए कि लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

पाठ से आगे

1. तोत्तो–चान द्वारा यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाना साहसिक कार्य था। हम अपने दैनिक जीवन में कौन–कौन से बहादुरी या साहस के कार्य करते हैं। उदाहरण सहित बताइए।
2. यासुकी–चान जैसे शारीरिक चुनौतियों वाले व्यक्ति के प्रति सहानुभूति जताना अथवा असंवेदनशीलता दोनों ही प्रकार के व्यवहार उन्हें ठेस पहुँचाते हैं। आपकी समझ से उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?

AXKFBR

3. तोत्तो–चान ने माता–पिता से झूठ बोलकर अपने मित्र यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाने जैसा साहसिक कार्य किया। आपने भी यदि किसी की सहयोग के लिए या किसी अच्छे कार्य के लिए झूठ का सहारा लिया हो, तो निःसंकोच उल्लेख करें।
4. यासुकी–चान जैसे शारीरिक चुनौतियों से जूझने वाले व्यक्तियों के लिए विशेष सुविधा की आवश्यकता होती है। विद्यालयों अथवा सार्वजनिक स्थलों पर ऐसे कौन–कौन से भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। आपसी चर्चा के पश्चात् एक सूची तैयार कीजिए।

भाषा के बारे में

1. **द्विशाखा, तिपाई** जैसे शब्दों का उल्लेख इस पाठ में हुआ है। इन शब्दों का पहला पद संख्यावाची विशेषण है। इस तरह के शब्दों से बने संख्यावाची पदों को द्विगु समास कहते हैं। जब संख्यावाची पदों से किसी विशेष अर्थ का बोध होता है तब वहाँ बहुब्रीहि समास होता है, जैसे– दशानन। द्विगु और बहुब्रीहि समास के पाँच–पाँच उदाहरण लिखिए।

2. नीचे दी गई पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करें–

   यासुकी–चान डाल के सहारे खड़ा था कुछ झिझकता हुआ वह मुस्कराया तब उसने पूछा क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ

   उस दिन यासुकी–चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना यासुकी–चान ने खुश होते हुए कहा

3. 'इस **भेद** का पता न तो तोत्तो–चान के माता–पिता को था न ही यासुकी–चान को।' इस वाक्य में **भेद** शब्द का प्रयोग राज़ या गुप्त बात के लिए हुआ है। **भेद** शब्द का प्रयोग कई बार अंतर बताने (जैसे–मनुष्य और पशु में **भेद** होता है।), प्रकार बताने (संज्ञा शब्द के तीन भेद होते हैं।) आदि के लिए होता है। आप भी **भेद** शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाइए।

AXUBDE

4. कुछ क्रियाओं से संज्ञा शब्द बनते हैं जैसे– रोना से रुलाई, धोना से धुलाई इत्यादि। यहाँ **ओ–'उ'** में तथा **आ–'ई'** में बदल जाते हैं। कुछ इसी तरह की क्रियाओं से संज्ञा शब्द बनाइए और यह भी देखिए कि इसके लिए उनमें किस तरह के बदलाव की जरूरत पड़ती है?

योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से या शिक्षकों की मदद से निम्नलिखित के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए और पढ़िए।

   - शिवानी की कहानी 'अपराजिता', हेलेन केलर की जीवनी, यशपाल की कहानी 'गूँगे'।

AY47F2

2. शारीरिक चुनौती वाले व्यक्तियों का समाज के प्रति क्या दृष्टिकोण होता है उनसे चर्चा कर लिखिए।

3. समास व इसके भेदों पर अपने शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कीजिए।